International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 22-09-2025, Accepted: 22-10-2025, Published: 06-11-2025
Volume 7, Issue 2, 2025, Page No. 32-35

बहुआयामी शिक्षक कैसा हो: एक विवेचन

डॉ. अमी राठौड़[1], उषा शर्मा[2]

[1] सह–आचार्य, शिक्षा विभाग, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड–टू–बी विश्वविद्यालय डबोक उदयपुर, राजस्थान, भारत

[2] सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड–टू–बी विश्वविद्यालय डबोक उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

"गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥"

श्री गुरु गीता के इस श्लोक के माध्यम से गुरु के महत्व को भलीभाँति समझा जा सकता है। प्रत्येक युग में गुरु का स्थान पूजनीय रहा है कृ वे ज्ञान, संस्कार और जीवन के आदर्श का प्रतीक माने गए हैं। यद्यपि काल, देश और परिस्थितियों के अनुसार गुरु की कार्यशैली में परिवर्तन होता रहा है, तथापि गुरु का मूल स्वरूप सदैव स्थिर और आदरणीय रहा है।

प्राचीन काल में जहाँ धनुर्विद्या या शास्त्रज्ञान को अनिवार्य माना जाता था, वहीं आज के युग में ज्ञान के प्रसार और नवाचारों के लिए भिन्न प्रकार के कौशल और तकनीकों की आवश्यकता है। आज मात्र पुस्तकीय ज्ञान प्रदान कर देना शिक्षण का पूर्ण उद्देश्य नहीं रह गया है। आधुनिक समाज में गुरु को शिक्षण के साथ–साथ प्रेरक, मार्गदर्शक, नवाचारी और तकनीकी रूप से दक्ष भी होना आवश्यक है। समय की मांग के अनुरूप शिक्षक को अपने शिक्षण में नवीन विधियों, तकनीकी साधनों और सृजनात्मक दृष्टिकोण का समावेश करना चाहिए। आज का शिक्षण शिक्षक–केंद्रित न रहकर शिष्य–केंद्रित हो गया है, अतः शिक्षक को मनोवैज्ञानिक समझ, सहानुभूति, संवाद–कौशल और नेतृत्व जैसे गुणों से भी सम्पन्न होना चाहिए।

इस लेख में लेखिकाओं ने आधुनिक शिक्षा प्रणाली की आवश्यकताओं के अनुरूप बहुआयामी शिक्षक की संकल्पना को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। इसमें यह बताया गया है कि एक सच्चा आधुनिक शिक्षक केवल अपने विषय का ज्ञाता न होकर, सभी विषयों और जीवन के विविध पक्षों से परिचित, सुदृढ़ नेतृत्वकर्ता, तकनीकी रूप से सक्षम, तथा धैर्यवान और संवेदनशील व्यक्ति होना चाहिए।

मूल शब्दः बहुआयामी शिक्षक, आधुनिकता, ज्ञान, नवाचार, अनुशासन, रचनात्मकता, जीवनमूल्य, मार्गदर्शक आदि

भूमिका

'कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम — यह उक्ति सार्वभौमिक रूप से स्वीकार की गई है कि सम्पूर्ण जगत के गुरु के रूप में भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिष्ठा सर्वोपरि है। वे केवल अध्यापक या मार्गदर्शक ही नहीं, अपितु बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी हैं, जिनके जीवन में धर्म, नीति, करुणा, साहस, नेतृत्व एवं कर्तव्य का अद्भुत संगम दृ ष्टिगोचर होता है। श्रीकृष्ण का जीवन मानवता के लिए एक आदर्श पथ प्रदर्शित करता है। उनके उपदेश और आचरण जन–जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रेरणा प्रदान करते हैं तथा उनका अनुकरण व्यक्ति को आत्मविकास, संतुलन और उद्देश्यपूर्ण जीवन की दिशा में अग्रसर करता है।

हिन्दु धर्मशास्त्रों में कृष्ण अवतार को पूर्ण अवतार माना गया है। इसलिए श्रीकृष्ण जगत गुरू के रूप में सम्पूर्ण संसार के पथ प्रदर्शक है। श्रीकृष्ण ने सदैव अपने युग को नव सृजन की दिशा की ओर मोड़ा ताकि प्रत्येक मानव नवीन सृजन करते हुए जीवनयापन कर सके। 64 कलाओं अर्थात सर्व गुणों संपन्न के रूप में श्रीकृष्ण का अनुसरण किया जाता है।

वर्तमान समय में यदि शिक्षण कार्य करने वाले गुरु अपने व्यक्तित्व में श्रीकृष्ण के समान बहुआयामी गुणों कृ जैसे धैर्य, विवेक, करुणा, नेतृत्व, संवाद–कौशल और कर्तव्यनिष्ठा कृ का समावेश करें, तो वे वास्तव में आदर्श एवं बहु आयामी गुरु कहलाएँगे। इसका उत्कृष्ट उदाहरण महाभारत के प्रसंग में दृष्टिगोचर होता है, जब अर्जुन अपने ही परिजनों के विरुद्ध युद्ध करने की स्थिति में मानसिक द्वंद्व और असमंजस से ग्रस्त हो जाते हैं। उस समय भगवान श्रीकृष्ण, एक गुरु और मार्गदर्शक के रूप में, अर्जुन को उनके कर्तव्य का बोध कराते हैं। उन्होंने समय की मांग और वस्तुस्थिति को समझने का उपदेश देते हुए अर्जुन को आत्म–संदेह से निकालकर धर्म और कर्तव्य के पथ पर अग्रसर किया। इसी कारण से उपनिषदों में कहा गया है "आचार्यदेवो भव।" तैत्तिरीयोपनिषद्, यह वचन इस तथ्य की पुष्टि करता है कि गुरु केवल ज्ञान का प्रदाता नहीं, बल्कि जीवन की दिशा देने वाला मार्गदर्शक होता है, जो शिष्य को उसके कर्तव्य और धर्म की ओर प्रेरित करता है।

अतः कह सकते है कि गुरू सदैव भटके हुए व कर्तव्य विमुख विद्यार्थियों को सदैव सच्चा मार्गदर्शक बनकर उनका मार्ग प्रशस्त करते हुए उनके जीवन को एक नवीन दिशा देते हैं। आज के समय में यह आवश्यकता है कि प्रत्येक शिक्षक अपने सफल शिक्षण कार्य हेतु श्रीकृष्ण की भांति एक बहुआयामी गुणों को अपनाते हुए शिक्षक बने।

शिक्षक को अपने बौद्धिक, भावनात्मक तथा सामाजिक कौशल के संतुलित प्रयोग से कक्षा में ऐसा शिक्षण वातावरण निर्मित करना चाहिए, जो न केवल विद्यार्थियों के व्यवहारिक विकास में सहायक हो, अपितु उनके जीवन दृष्टिकोण में भी सकारात्मक परिवर्तन लाने वाला बने। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षक को शिक्षार्थियों के प्रति केवल अनुशासनकर्ता नहीं, बल्कि एक सहायक, मार्गदर्शक, मित्र और सखा के रूप में व्यवहार करना चाहिए।

जब विद्यार्थी शिक्षक के समक्ष आत्मविश्वासपूर्वक अपनी जिज्ञासाएँ, समस्याएँ और अनुभव साझा करने लगते हैं, तभी वास्तविक शिक्षण की प्रक्रिया सार्थक होती है।

शिक्षक को सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि शिक्षण केवल एक व्यवसाय या आजीविका का साधन नहीं, बल्कि भावी पीढ़ी के निर्माण और समाज के नैतिक उत्थान का पवित्र दायित्व है। यह उक्त वर्णनानुसार यह जानना आवश्यक है कि आखिर बहुआयामी शिक्षक कौन हो सकते हैं व क्या–क्या गुणों का समावेश उनमें होता है।

बहुआयामी शिक्षक के गुण

व्यक्तित्व निर्माता

शिक्षक का दायित्व केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को दिशा और आकार देना भी है। एक आदर्श शिक्षक अपने आचरण, विचारों और व्यवहार के माध्यम से उन मूल्यों और गुणों को आत्मसात करता है जिन्हें वह विद्यार्थियों में विकसित करना चाहता है। विद्यार्थी स्वाभाविक रूप से अपने गुरु के व्यक्तित्व में परिलक्षित गुणों को ग्रहण करते हैं। इस प्रकार, शिक्षक अपने उदाहरण से ही विद्यार्थियों के जीवन और व्यक्तित्व को गढ़ता है।

"गुरु वही जो शिष्य के भीतर सोए हुए देवत्व को जगा दे।" स्वामी विवेकानंद, संकलित रचनाएँ (खंड ४)

विषय ज्ञाता

एक सक्षम शिक्षक को अपने विषय का गहन ज्ञान होना चाहिए, साथ ही अन्य संबंधित विषयों की भी समझ आवश्यक है। इससे विद्यार्थी केवल आंशिक नहीं, बल्कि समग्र दृष्टिकोण से ज्ञान अर्जित कर पाते हैं, जिससे उनका बौद्धिक विकास संतुलित रूप में होता है।

रचनात्मक

रचनात्मक शिक्षक साधारण शिक्षण क्रियाओं को भी नवीनता और सृजनात्मक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है। इससे शिक्षण प्रक्रिया न केवल रोचक बनती है, बल्कि विद्यार्थी कठिन विषयों को भी रुचिपूर्वक समझने लगते हैं।

संचार कौशल का उत्तम उपयोगकर्ता

शिक्षण एक कला है और इसका आधार सशक्त संप्रेषण क्षमता पर निर्भर करता है। शिक्षक को स्पष्ट, प्रभावी और उद्देश्यपूर्ण संवाद करने में दक्ष होना चाहिए, ताकि ज्ञान का संचार सटीकता और संवेदनशीलता के साथ हो सके।

उत्तम श्रोता

यद्यपि शिक्षक सामान्यतः वक्ता के रूप में पहचाना जाता है, परंतु एक सफल शिक्षक उत्कृष्ट श्रोता भी होता है। वह विद्यार्थियों की समस्याओं, विचारों और अनुभवों को ध्यानपूर्वक सुनकर उनके समाधान हेतु मार्गदर्शन प्रदान करता है।

नवाचार कर्ता

समय के साथ शिक्षा पद्धतियाँ और समाज निरंतर परिवर्तनशील हैं। अतः शिक्षक को नवीन तकनीकों, विचारों और पद्धतियों को अपनाने के लिए तत्पर रहना चाहिए। यह प्रवृत्ति विद्यार्थियों में भी नवीन सोच और रचनात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करती है।

नेतृत्व क्षमता युक्त

एक बहुआयामी शिक्षक में नेतृत्व का गुण अंतर्निहित होता है। वह न केवल कक्षा का संचालन करता है, बल्कि विद्यार्थियों और सहकर्मियों को भी प्रेरित करने में सक्षम होता है। एक सशक्त शिक्षक विद्यालय की प्रगति और शिक्षण संस्कृति का दिशा–निर्देशक बनता है।

आत्मविश्वासी

आत्मविश्वास शिक्षण का मूल आधार है। एक शिक्षक को अपने ज्ञान, आचरण और उद्देश्य पर दृढ़ विश्वास होना चाहिए। यही आत्मविश्वास उसे विद्यार्थियों में भी प्रेरणा और संबल का स्रोत बनाता है, जिससे वे जीवन की चुनौतियों का सामना निडर होकर कर सकें।

उत्तम मार्गदर्शक

एक प्रभावी शिक्षक केवल अध्यापक नहीं, बल्कि एक कुशल सलाहकार भी होता है। वह विद्यार्थियों को उनके शैक्षणिक, व्यावसायिक और नैतिक निर्णयों में मार्गदर्शन प्रदान करता है, जिससे वे अपने जीवन के उद्देश्यों की पहचान कर सकें।

धैर्य एवं सहानुभूति युक्त

धैर्य शिक्षक का सर्वोपरि गुण है। शिक्षण प्रक्रिया में विविध परिस्थितियाँ आती हैं, जिनमें शांत चित्त रहकर कार्य करना आवश्यक होता है। शिक्षक का धैर्य और सहानुभूति विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और सहयोग की भावना को जन्म देती है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, भारतीय संस्कृति पर निबंध में लिखा है "शिक्षक वह दीपक है जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है।"

तकनीकी ज्ञान का अभ्यासी

वर्तमान युग तकनीक–प्रधान बन चुका है, जहाँ शिक्षा क्षेत्र भी तकनीकी साधनों पर निर्भर हो गया है। अतः प्रत्येक शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह पाठ्यक्रमीय ज्ञान के साथ–साथ सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का भी समुचित ज्ञान रखे। तकनीकी दक्षता के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया अधिक प्रभावी, सहभागितापूर्ण और आधुनिक बनती है। यह गुण एक बहुआयामी शिक्षक की अनिवार्य पहचान है।

पुनर्बलन प्रदाता

हर विद्यार्थी की सीखने की गति, समझ और आवश्यकताएँ भिन्न होती हैं। एक सक्षम शिक्षक इन विविधताओं को समझते हुए उपयुक्त पुनर्बलन (reinforcement) प्रदान करता है। इससे विद्यार्थी का आत्मविश्वास बढ़ता है, उसका प्रदर्शन सुधरता है, और शिक्षण का वातावरण सकारात्मक बनता है।

प्रेम एवं सहानुभूति युक्त

विद्यालय विद्यार्थियों का दूसरा परिवार होता है। अतः शिक्षक को अपने व्यवहार में प्रेम, करुणा और सहानुभूति जैसे गुणों का विकास करना चाहिए। ऐसा वातावरण विद्यार्थियों में विश्वास, आत्मीयता और नैतिक मूल्यों के प्रति सम्मान उत्पन्न करता है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण युक्त

एक शिक्षक को विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को समझते हुए शिक्षण रणनीतियाँ बनानी चाहिए। सकारात्मक सोच रखने वाला शिक्षक न केवल विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान करता है, बल्कि उनके साथ भावनात्मक संबंध भी स्थापित करता है, जिससे शिक्षण प्रक्रिया अधिक मानवीय और प्रभावशाली बनती है।

प्रकाश स्तम्भ के समान मार्गदर्शक

जिस प्रकार प्रकाश स्तम्भ समुद्र में दिशाहीन नाविकों को मार्ग दिखाता है, उसी प्रकार शिक्षक भी विद्यार्थियों के जीवन को दिशा प्रदान करता है। वह उनके भविष्य का निर्माता होता है, जो अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। श्री अरविन्द ने भी कहा है की "शिक्षक आदेश देने वाला नहीं, अपितु सहायक और मार्गदर्शक होता है।"

सामाजिक कौशल का ज्ञाता

शिक्षक समाज में रहकर ही शिक्षा का कार्य करता है। अतः उसमें सामाजिक व्यवहार, सहयोग, संवाद और पारस्परिक सम्मान जैसे कौशलों का होना आवश्यक है। इन गुणों के माध्यम से वह विद्यार्थियों को समाज से जोड़ता है और उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता है।

सहयोग की भावना युक्त
शिक्षण कार्य सामूहिक प्रयासों से ही सफल होता है। इसलिए शिक्षक को सहकर्मियों, विद्यार्थियों और अभिभावकों के साथ प्रभावी समन्वय स्थापित करना चाहिए। परिस्थितियाँ चाहे प्रतिकूल हों, शिक्षक को अपने नैतिक मूल्यों और व्यावसायिक मानदंडों पर अडिग रहकर समूह में संतुलन बनाए रखना चाहिए।

प्रबंधन कौशल युक्त
प्रत्येक विद्यार्थी की बौद्धिक और भावनात्मक क्षमता भिन्न होती है। अतः शिक्षक को कक्षा–कक्ष प्रबंधन में दक्ष होना चाहिए। वह संवाद, सहानुभूति, समस्या–समाधान और सकारात्मक नेतृत्व के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया को व्यवस्थित रखता है, जिससे सभी विद्यार्थियों के लिए सीखने का वातावरण अनुकूल बन सके।

जुड़ाव एवं समर्पण से परिपूर्ण
शिक्षण केवल एक व्यवसाय नहीं, बल्कि एक जीवनधर्म और जुनून है। शिक्षक को सदैव अपने शैक्षणिक उद्देश्यों से जुड़ा रहना चाहिए, क्योंकि यही जुड़ाव उसे प्रेरणा, संतोष और समाज में सम्मान का अनुभव कराता है। समर्पण और उद्देश्यबद्धता ही शिक्षक के व्यावसायिक आचरण की पहचान है।

उत्कृष्ट दार्शनिक
एक सच्चा शिक्षक सीमित सोच तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह अपने चिंतन, दृष्टिकोण और मूल्यों में दार्शनिक होता है। उसके विचार और विश्वास विद्यार्थियों के जीवन को गहराई से प्रभावित करते हैं। जैसा विनोबा भावे का मानना है "सच्चा गुरु वही है जो जीवन से शिक्षा देता है, वाणी से नहीं।"

शिक्षण के विभिन्न स्तरों का ज्ञाता
प्रो. एन. एल. ग्रेजर, डॉ. हिल्डा टाबा और ब्लूम जैसे शिक्षा–शास्त्रियों ने शिक्षण के तीन प्रमुख स्तर बताए हैंकृ स्मृति स्तर, बोध स्तर और चिंतन स्तर। एक सक्षम शिक्षक को इन तीनों स्तरों पर विद्यार्थियों के साथ कार्य करना चाहिए, ताकि ज्ञान का संप्रेषण केवल याद करने तक सीमित न रहे, बल्कि समझ, विश्लेषण और सृजन की दिशा में अग्रसर हो सके।

कल्पनाशील
एक प्रभावी शिक्षक विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति को प्रोत्साहित करता है, जिससे वे विषय–वस्तु को गहराई से आत्मसात कर सकें। कल्पना, तर्क और चिंतन के संयोजन से विद्यार्थी नवाचार की दिशा में अग्रसर होते हैं, और यही शिक्षा का अंतिम उद्देश्य है कृ ज्ञान का सृजन।

योजना निर्माणकर्ता
किसी भी कार्य की सफलता का आधार उसकी पूर्व योजना होती है। एक बहुआयामी शिक्षक को शैक्षणिक एवं सह–शैक्षणिक गतिविधियों के लिए सुविचारित और सुदृढ़ योजना तैयार करनी चाहिए, जिससे निर्धारित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की समयबद्ध पूर्ति हो सके। योजनाबद्ध कार्य न केवल शिक्षण की प्रभावशीलता को बढ़ाता है, बल्कि संसाधनों के संतुलित उपयोग और अपेक्षित परिणामों की प्राप्ति में भी सहायक होता है।

समूह में कार्य करने की दक्षता
शिक्षक केवल कक्षा तक सीमित नहीं होता, वह संपूर्ण विद्यालय समुदाय का अभिन्न अंग होता है। अतः उसके लिए टीम वर्क की भावना अनिवार्य है। समूह में कार्य करने से न केवल विचारों का आदान–प्रदान होता है, बल्कि विविध दृष्टिकोणों और रचनात्मकता के माध्यम से शिक्षण की गुणवत्ता भी बढ़ती है। सहयोगी भावना से युक्त शिक्षक विद्यालयी संस्कृति के विकास में सक्रिय योगदान देता है।

तकनीकी उपयोगकर्ता
प्राचीन गुरुकुल परंपरा से लेकर वर्तमान तकनीकी युग तक शिक्षा में निरंतर परिवर्तन हुए हैं। इसलिए एक बहुआयामी शिक्षक को सदैव नवीन शैक्षणिक प्रवृत्तियों, अनुसंधानों और तकनीकी नवाचारों से अद्यतन रहना चाहिए। नवीन पद्धतियों को अपनाकर शिक्षक विद्यार्थियों में न केवल ज्ञान, बल्कि कौशल, मूल्य और सृजनात्मकता का भी विकास कर सकता है।

स्व–मूल्यांकन प्रवृत्ति युक्त
एक सक्षम शिक्षक केवल विद्यार्थियों के प्रदर्शन का मूल्यांकन नहीं करता, बल्कि अपने शिक्षण व्यवहार, विधियों और दृष्टिकोण का भी आत्मविश्लेषण करता है। स्व–मूल्यांकन से शिक्षक अपनी शक्तियों और सीमाओं को पहचानता है तथा निरंतर सुधार के मार्ग पर अग्रसर होता है। यह आत्मपरक चिंतन उसकी व्यावसायिक परिपक्वता का सूचक है।

स्व–अनुशासित
अनुशासन प्रत्येक सफल शिक्षक का आधारभूत गुण है। आत्म–अनुशासित शिक्षक समय, व्यवहार और आचरण में आदर्श प्रस्तुत करता है। चूँकि विद्यार्थी प्रायः अपने शिक्षकों के व्यवहार का अनुकरण करते हैं, इसलिए शिक्षक का अनुशासित आचरण उनके लिए प्रेरणास्रोत बनता है। यह गुण न केवल शिक्षण की गुणवत्ता को बढ़ाता है, बल्कि शिक्षक की गरिमा और विश्वसनीयता को भी सुदृढ़ करता है।

उत्साही / जुनूनी शिक्षक
शिक्षण कार्य सदैव से समाज में सर्वोच्च और सर्वाधिक सम्मानित माना गया है। एक शिक्षक को अपने व्यवहार में गरिमा, विनम्रता और समर्पण की भावना बनाए रखनी चाहिए। वास्तविक सम्मान वही प्राप्त करता है, जो दूसरों — सहकर्मियों, विद्यार्थियों और समाज कृ को भी सम्मान देना जानता है। इस प्रकार, शिक्षक अपने आचरण से न केवल शिक्षा जगत में, बल्कि संपूर्ण समाज में प्रतिष्ठा अर्जित करता है और प्राचीन गुरु–शिष्य परंपरा को आधुनिक रूप में जीवंत बनाए रखता है।

निष्कर्ष
निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि बहुआयामी शिक्षक केवल एक अध्यापक की भूमिका तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह अपने व्यक्तित्व में विविध गुणों, मूल्यों, ज्ञान और कौशलों का समन्वय करता है। उपर्युक्त सभी विशेषताओं का समावेश शिक्षण कार्य की सार्थकता को बढ़ाता है तथा शिक्षा के मूल उद्देश्य कृ ज्ञान, आचरण और सृजनशीलता कृ की पूर्ति करता है।
ऐसा शिक्षक न केवल ज्ञान का संवाहक होता है, बल्कि प्रेरणा, नवाचार और मानवीय मूल्यों का संवाहक भी बनता है।
बदलते वैश्विक परिवेश में शिक्षक को सदैव सजग, सक्रिय और अद्यतन रहना चाहिए, ताकि वह निरंतर विकसित होती प्रौद्योगिकी, शैक्षणिक नवाचारों और सामाजिक परिवर्तनों को समझकर उन्हें शिक्षण प्रक्रिया में समुचित रूप से लागू कर सके। नवीन तकनीकी साधनों के प्रयोग से वह कक्षा–कक्ष को नीरसता से मुक्त कर, सृजनात्मक एवं कलात्मक शिक्षण का वातावरण निर्मित कर सकता है।
आज के समय में यह अपेक्षित है कि शिक्षक केवल अपने विषय तक सीमित न रहे, बल्कि अंतर्विषयक (interdisciplinary) दृष्टिकोण अपनाते हुए शिक्षण को जीवनोपयोगी और व्यवहारिक बनाए। प्रकृति, समाज और अनुभव से जोड़कर शिक्षा को

वास्तविक जीवन से संबंधित करना ही आधुनिक शिक्षण का लक्ष्य है।

अतः कहा जा सकता है कि बहुआयामी शिक्षक वह है जो परंपरा और आधुनिकता, ज्ञान और नवाचार, अनुशासन और रचनात्मकता कृ इन सभी का संगम बनकर शिक्षा को जीवनमूल्य से जोड़ता है। वही सच्चे अर्थों में आधुनिक युग का "आचार्य" है, जो स्वयं प्रकाशित होकर दूसरों के जीवन को आलोकित करता है।

संदर्भ सूची

1. स्कन्दपुराण, उत्तरखण्ड, श्री गुरु गीता, श्लोक 9. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, 2002.
2. तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षावल्ली. दिल्ली: वेदांत दर्शन संहिता, मोतीलाल बनारसीदास, 2010.
3. स्वामी विवेकानंद. (2012). संपूर्ण कृतियाँ, खंड 4. कोलकाता: अद्वैत आश्रम.
4. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन. (1995). भारतीय संस्कृति पर निबंध. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ.
5. श्री अरविन्द. (1949). मानव चक्र. पांडिचेरी: श्री अरविन्द आश्रम.
6. आचार्य विनोबा भावे. (1984). विचारमाला. पुणे: सरस्वती प्रकाशन.
7. ब्लूम, बेंजामिन एस. (1956). शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण: शैक्षिक लक्ष्यों का वर्गीकरण (खंड–I: संज्ञानात्मक क्षेत्र). न्यूयॉर्क: डेविड मैके कम्पनी।
8. गेज, एन.एल. एवं बर्लिनर, डी.सी. (1979). शैक्षिक मनोविज्ञान (तृतीय संस्करण). शिकागो: रैण्ड मैकनेली कॉलेज पब्लिशिंग कम्पनी।